ओम् शान्ति दिनांक-22-1-20 मधुबन

प्राणप्यारे अव्यक्तमूर्त मात पिता-बापदादा के अति स्नेही, सदा बेहद सेवाओं के उमंग-उत्साह में रहने वाली निमित्त टीचर्स बहिनें तथा सर्व ब्राह्मण कुल भूषण भाई बहिनें,

ईश्वरीय स्नेह सम्पन्न मधुर याद के साथ शिव जयन्ती सो हम बच्चों की जयन्ती, सो गीता जयन्ती, सो सतयुगी दुनिया की जयन्ती की बहुत-बहुत दिल से हार्दिक शुभ बधाईयां।

बाद समाचार - हम सबके अति प्रिय, सर्व मनुष्यात्माओं के गति-सद्गति दाता, विश्व कल्याणकारी स्वर्णिम युग के रचयिता शिव भोलानाथ बाबा की 84 वीं त्रिमूर्ति शिव जयन्ती का पावन त्योहार 21 फरवरी 2020 को है, जिसे हम सभी मिलकर खूब धूमधाम से मनायेंगे। आज 22 फरवरी की साकार मुरली में मीठे बाबा ने इस त्योहार को खूब धूमधाम से मनाने का इशारा दिया है। बाबा कहे बच्चे जैसे दीपावली पर खूब रोशनी करते, ऐसे आप अपने-अपने स्थानों को लाइट की लड़ियों से खूब सजाओ। ज्ञान रत्नों की बड़ी बड़ी दुकानें खोलो। वैसे तो हर वर्ष सभी स्थानों पर एक सप्ताह तक यह त्योहार मनाते ही हैं, बाबा के सभी बच्चे अपने-अपने घरों में, दफ्तरों में, दुकानों में, खेती आदि में शिवबाबा का ध्वज फहराते हैं। सेवाकेन्द्र को भी बाबा की झण्डियों वा बिजली की लडियों आदि से खूब सजाते हैं। इस अवसर पर शिव के मन्दिरों में प्रदर्शनी आदि भी आयोजित करते हैं। प्रभातफेरी भी निकालते हैं। परन्तु साकार में बाबा कहा करते कि बच्चे इस दिन शिव-मन्दिरों में जाकर शिव-भक्तों को पर्चे बाँटो जिनमें शिवबाबा के प्रति कुछ प्रश्न किये हों और साथ-साथ निमन्त्रण भी हो कि आकर समझो और नि:शुल्क सेवा से लाभ लो। तो उस पर्चे का मैटर आपके पास भेज रहे हैं। साथ-साथ इस बार गुजरात ज़ोन के टर्न में प्यारे अव्यक्त बापदादा ने विशेष मन्सा सेवा प्रति हम सबका ध्यान खिंचवाया है। जैसे वाचा सेवा में बहुत अच्छी सफलता मिल रही है। ऐसे शक्तिशाली मन्सा द्वारा सेवा करने से अनेक आत्मायें समीप आयेंगी। इस जनवरी मास में तो सभी ने इसका बहुत अच्छा अभ्यास किया है। शिव जयन्ती का त्योहार विशेष परमात्म प्रत्यक्षता करने का दिन है तो विशेष संगठित रूप में सभी सेवास्थानों पर मन्सा सेवा के लिए योग तपस्या के कार्यक्रम रखे जायें। विशेष सार्वजनिक कार्यक्रम की सफलता के लिए मन्सा-वाचा और कर्मणा तीनों रूप से एक साथ सेवा करनी है। इसके लिए कुछ सुझाव आपके पास भेज रहे हैं।

1) सार्वजनिक कार्यक्रमों में योगाभ्यास के लिए कम से कम 15 मिनट सामूहिक योग अवश्य रखा जाए। स्टेज पर कार्यक्रम के अनुसार कम से कम 4, 6, 8 या अधिक बहिनें योग अभ्यास के लिए बैठें, योग शिविर भी अवश्य रखे जाएं।
2) अधिक से अधिक स्थानों पर शिव दर्शन प्रदर्शनी का भी आयोजन किया जाए।
3) मन्दिरों के पुजारियों व ट्रस्टीज़ के अलग-अलग स्नेह मिलन भी रख सकते हैं।
4) कुछ बड़े-बड़े होर्डिंग्स शहर के मुख्य स्थानों पर लगायें जाएं ताकि हर एक शिव जयन्ति का महत्व समझ सके।
5) जहाँ सम्भव हो वहाँ युवाओं द्वारा ''शिव सन्देश यात्रायें'' स्कूलों के बच्चों को साथ मिलाकर निकालने से भी विशेष सबका ध्यान जायेगा और पर्चे भी अधिक संख्या में वितरित कर सकेंगे।
6) रेडिओ, टी.वी. इन्टरव्यूज़ और समाचार पत्रों में लेख के लिए पहले से ही मैटर दिये जायें।
7) शिव जयन्ती से पहले प्रेस कान्फ्रेन्स भी रख सकते हैं, शिव जयन्ती के दिन समाचार पत्रों में एक ही साथ समाचार प्रकाशित हों या प्रेस नोटस दिये जाएं ताकि सबको सन्देश मिल सके।
8) सभी स्थानों पर एक ही विषय पर प्रवचन रखे जायें और समाचार पत्रों के माध्यम से भी सभी को सूचना दी जाए। तो चारों ओर नाम बाला हो सकता है।

निम्नलिखित बिन्दुओं पर पर्चे के मैटर में अथवा प्रवचन में स्पष्टीकरण कर सकते हैं। नारे भी लगवा सकते हैं, जिससे लोगों के मन में कुछ समझने वा जानने की जिज्ञासा जाग्रत हो।
विचार करें - शिव जयन्ती हीरे तुल्य जयन्ती कैसे है?

1) परमात्माए नम: कहकर वन्दना केवल निराकार ज्योति स्वरूप शिव की ही होती है। बाकी ब्रह्मा विष्णु शंकर की महिमा में उन्हें देवताए नम: कहकर वंदना करते हैं। अत: शिव ही परमात्मा है।
2) गीता में भगवानुवाच है - प्रजापिता ब्रह्मा ने कल्प के आदि में ज्ञान यज्ञ रचा जिससे देवताओं की उत्पत्ति हुई। तो देवताओं को क्या ब्रह्मा ने रचा, जिसकी वंदना ब्रह्मा देवता के रूप में होती है? या ब्रह्मा के द्वारा करनकरावनहार परमात्मा शिव ने रचा?
3) परमात्मा शिव के अवतरण दिवस को शिव रात्रि के रूप में मनाते हैं, यह रात्रि शब्द अज्ञान अंधेरे का प्रतीक है। परमात्मा का अवतरण धर्म ग्लानि के समय होता है। वर्तमान युग में धर्म ग्लानि का समय स्पष्ट दिखाई दे रहा है। अत: अभी ही शिव परमात्मा के अवतरण का समय है। शिव जयन्ती ही गीता जयंती है।

कुछ नारे

1- सबका मालिक कौन? एक शिव परमात्मा
2- पतित पावन कौन? एक शिव परमात्मा
3- फिर से गीता ज्ञान सुनाने भारत में भगवान आये हैं।

भगवानुवाच -
मैं वेद शास्त्र, यज्ञ तप आदि से नहीं मिलता हूँ। (कहानी - अंधों ने हाथी देखा)
यदा यदाहि धर्मस्य ग्लानि (अनेक धर्म होते - सत धर्म की ग्लानि है)
परित्रणायाम साधुनाम...
अनेक रास्ते परमात्मा से मिलने के नहीं हैं
(जैसे हर वर्ष कोई स्टूडेन्ट एक ही पुस्तक का अध्ययन करता रहे तो क्लास आगे नहीं बढ़ सकता)

(पर्चे का मैटर)

शिव-भक्तों के प्रति स्नेह-सम्पन्न पत्र

ओम् नम:शिवाय

परमपिता शिव की प्रिय सन्तान,
प्रिय आत्मन्!
आपकी परमपिता शिव से अनन्य प्रीत है और आप उनसे आत्म-मिलन अथवा मनोमिलन के आकांक्षी हैं। आपकी उनके प्रति भक्ति एवं श्रद्धा तो है परन्तु क्या आप अपने परम श्रद्धेय अथवा परम पूज्य परमपिता के **प्रति निम्नलिखित आवश्यक बातें जानते हैं? -**

1. शिव और शंकर में क्या अन्तर है? शिवलिंग अथवा ज्योतिर्लिंग किस अव्यक्त स्वरूप की प्रतिमा है? शिव को 'त्रिमूर्ति', 'त्रयम्बकेश्वर', 'देवदेव' किस अर्थ में कहा जाता है?
2. शिव का धाम अथवा लोक कहाँ और कैसा है?
3. शिव की प्रतिमा पर तीन रेखाएँ और एक बिन्दु किस बात के संकेतक अथवा चिन्ह हैं?
4. मनुष्य चोले में आत्मा का क्या स्वरूप है और परमात्मा शिव से उसका क्या अनादि-अविनाशी सम्बन्ध है?
5. आत्मा शिव-मिलन कैसे मना सकती है? ईश्वरानुभूति करने की सहज सुलभ विधि क्या है?

6. शिव को आत्मा का माता-पिता, सद्गुरू, परमशिक्षक, सखा, सहायक किस अर्थ और संदर्भ में कहा गया है? जबकि शिव परमपिता हैं, तब उनसे हमें क्या विरासत अथवा जन्म-सिद्ध अधिकार प्राप्त हो सकता है? शिव को 'माता' और 'पिता' दोनों सम्बन्धों से क्यों याद किया जाता है?
7. ''शिव के भण्डारे भरपूर, काल-कण्टक दूर'' अथवा ''शिव भोले भण्डारी एवं अवढर दानी'' - ऐसा कहा गया है। तब प्रश्न उठता है कि काल-कण्टक कैसे दूर हों और हमारे भण्डारे कैसे भरपूर हों?
8. शिव-पिण्डी पर कलश से जो बूँद-बूँद जल चढ़ाया जाता है, उसका क्या भावार्थ है?
9. शिव के आगे जो नन्दीगण बैल दिखाया जाता है, वह किसका प्रतीक है?
10. शिव पर बेल-फल या अक क्यों चढ़ाया जाता है?
11. शिवरात्रि 'रात्रि' ही को क्यों मनाई जाती है? जागरण क्यों किया जाता है? व्रत क्यों रखा जाता है? शिवरात्रि मनाने का ठीक तरीका क्या है?
12. शिव परमधाम, निर्वाणधाम, शिव लोक अथवा परलोक से कब अवतरित होते हैं और आत्माओं को किस विधि से मुक्ति और जीवनमुक्ति प्रदान करते हैं?
13. क्या आप मुक्ति, जीवनमुक्ति के इच्छुक हैं? उस इच्छा को पूर्ण करने के लिये क्या उपाय है?
14. क्या आप जानना चाहते हैं कि इस समय शिव कहाँ हैं और क्या कर रहे हैं?
15. क्या आप जानते हैं कि वर्तमान समय में पर्यावरण प्रदूषण, आणविक अस्त्रों-शस्त्रों के संग्रह जन-संख्या में अतीव वृद्धि, नैतिक मूल्य में ह्रास और चारित्रिक गिरावट किस स्थिति अथवा संकट का सूचक है और इनका भावी परिणाम क्या होगा और आपको किस महान् स्थिति की अविलम्ब प्राप्ति के लिये क्या करना चाहिये?

उपरोक्त सभी बातों को समझने तथा अनुभव करने के लिए आपको हमारा स्नेह-सम्पन्न निमन्त्रण है, इसके लिये कोई चन्दा या शुल्क नहीं है।

आपकी रूहानी बहनें तथा रूहानी भाई
प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय

स्थानीय पता:

———————————

शिव जयन्ती का आध्यात्मिक रहस्य (अव्यक्त महावाक्य)

* शिवजयन्ती महाज्योति बाप और ज्योतिबिन्दु बच्चों के मिलन का यादगार पर्व है। इस दिन भक्त शिव पर जल अथवा दूध चढ़ाते हैं और जल चढ़ाने समय बीच में ब्राह्मण होते हैं। यह प्रतिज्ञा की निशानी है। तो तुम्हारे पास जब भी कोई आते हैं तो उन्हों से पहले प्रतिज्ञा का जल लो अर्थात् प्रतिज्ञा कराओ कि हम आज से एक शिवबाबा के ही बनकर रहेंगे।

* शिवरात्रि पर्व बलि चढ़ने का भी यादगार है - यादगार रुप में तो स्थूल बलि चढ़ाते हैं लेकिन होना है मन, बुद्धि और सम्बन्ध से समर्पित। बलि चढ़ना अर्थात् महाबलवान बनना। आप बच्चों को अपने कमजोरियों की बलि चढ़ानी है। सबसे बड़ी कमजोरी देह-अभिमान की है। देह-अभिमान के वंश को समर्पित करना ही बलि चढ़ना है। तो अब ऐसी शिवरात्रि मनाओ।

* शिवरात्रि पर्व पर परमात्म प्यार में व्रत भी रखते हैं। यह व्रत खुशी की भी निशानी है। व्रत रखना अर्थात् प्यार में त्याग भावना। तो शिवरात्रि पर अपनी श्रेष्ठ वृत्ति द्वारा यह व्रत लो कि सदा कमजोर वृत्ति को मिटाकर शुभ और श्रेष्ठ वृत्ति धारण करेंगे। वृत्ति से कृति का कनेक्शन है। कोई भी अच्छी वा बुरी बात पहले वृत्ति में धारण होती है फिर वाणी और कर्म में आती है। तो श्रेष्ठ वृत्ति का व्रत धारण करना ही सच्ची शिवरात्रि मनाना है।

* शिव रात्रि के दिन भक्त आत्माओं के पास शिव बाप के बिन्दू रुप की विशेष स्मृति रहती है। शिव जयन्ती वा शिवरात्रि कोई साकार रुप का यादगार नहीं है लेकिन निराकार बाप ज्योति बिन्दू का यादगार है। जिसे वे शिवलिंग के रुप में पूजते हैं। तो आप सभी के दिल में भी बाप के बिन्दु रुप की स्मृति सदा रहे। बिन्दू अर्थात् बीजरुप स्थिति में स्थित हो बीज डालो तो अनेक आत्माओं में बाप की वा समय की पहचान का बीज पड़ जायेगा।

* शिवरात्रि का दिन भोलानाथ बाप का दिन है। भोलानाथ अर्थात् बिना हिसाब के अनगिनत देने वाला। नॉलेजफुल होते भी भोला है। वैसे तो हिसाब करने में एक-एक संकल्प का भी हिसाब जान सकते हैं लेकिन जानते हुए भी देने में भोलानाथ है इसलिए सिर्फ सच्ची दिल से उसे राज़ी कर लो तो सब भण्डारे 21 जन्मों के लिए भरपूर कर देगा।

* जैसे शिवरात्रि के दिन भक्त लोग अपने भक्ति की मस्ती में मस्त हो जाते हैं। ऐसे आप बच्चे ''पा लिया'' इसी खुशी में सदा गाते-नाचते उमंग-उत्साह से यह यादगार मनाओ। आप अभी इस ब्राह्मण जीवन में बाप के साथ सर्व आत्माओं को सुख, शान्ति, खुशी और शक्ति का सहयोग दो तब दोनों की साथ-साथ पूजा होगी।

* शिवरात्रि का अर्थ है - अंधकार मिटाकर प्रकाश देने वाली रात्रि। शिव रात्रि मनाना अर्थात् ज्ञान सूर्य का प्रगट होना। तो आप बच्चे भी मास्टर ज्ञान सूर्य बन विश्व से अंधकार को मिटाकर रोशनी देने का कर्तव्य करो। अंधकार मिटाने वाली आत्माओं के पास अंधकार रह नहीं सकता। अगर किसी भी विकार का अंश है तो उसे अंधकार कहेंगे, रोशनी नहीं। रोशनी अर्थात् सम्पूर्ण पवित्रता।

* शिवजयन्ती पर आप बच्चे प्रतिज्ञा भी करते और झण्डा भी लहराते हो। प्रतिज्ञा का अर्थ है कि जान चली जाए लेकिन प्रतिज्ञा न जाए। कुछ भी त्याग करना पड़े, कुछ भी सुनना पड़े लेकिन प्रतिज्ञा न जाए। वचन अर्थात् वचन। तो ऐसे मन से प्रतिज्ञा करना अर्थात् मन को मनमनाभव बनाना। साथ-साथ हर आत्मा के दिल पर बाप की प्रत्यक्षता का झण्डा लहराओ – यही सच्ची-सच्ची शिवरात्रि मनाओ।

84 वीं त्रिमूर्ति शिव जयन्ती पर शिव ध्वज के नीचे हर एक संकल्प ले कि प्रतिज्ञायें

1) साक्षी दृष्टा की स्थिति में स्थित रह हर परिस्थिति में मनोरंजन का अनुभव करेंगे।
2) मीठे बोल और मुस्कराते हुए चेहरे द्वारा हर एक के साथ मधुरता सम्पन्न व्यवहार करेंगे।
3) सच्चे और साफ दिल से भोलानाथ शिव बाप को राज़ी कर चिंता और व्यर्थ चिंतन से मुक्त रहेंगे।
4) समस्याओं का वर्णन करने के बजाए उन्हें ज्ञान योग की शक्ति से समाधान करेंगे। कारण को निवारण में परिवर्तन करेंगे।
5) सम्पूर्ण पवित्रता का सुख लेने के लिए व्यर्थ वा निगेटिव संकल्प वा बोल को समाप्त कर अपनी वृत्तियों को भी पवित्र बनायेंगे।
6) संगमयुग के समय, संकल्प, श्वांस और सम्पत्ति रूपी खजाने को सफल कर सफलता मूर्त बनेंगे।
7) सदा स्वमानधारी बन सबको सम्मान देंगे। सबके प्रति शुभचिंतक बनकर रहेंगे।

(यह प्रतिज्ञायें सभी भाई बहिनें अवश्य करें) ओम् शान्ति।